भूगोल कक्षा 10वीं

अध्याय - 1

''संसाधन एवं विकास''

जानने योग्य तथ्य तथा महत्त्वपूर्ण शब्दावली :-

- ★ प्रकृति से प्राप्त विभिन्न वस्तुएँ जो हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने में प्रयुक्त होती हैं, जिनको बनाने के लिए प्रौद्योगिकी उपलब्ध हैं संसाधन कहलाते हैं।
- ★ जीव मंडल से प्राप्त संसाधन जैव संसाधन कहलाते हैं।
- ★ निर्जीव वस्तुओं द्वारा निर्मित संसाधन, अजैव संसाधन कहलाते हैं।
- ★ वे संसाधन जिन्हें विभिन्न भौतिक, रासायनिक अथवा यांत्रिक प्रक्रियाओं के द्वारा पुनः उपयोगी बनाया जा सकता है, नवीकरणीय संसाधन कहलाते हैं।
- ★ वे संसाधन जिन्हें एक बार उपयोग में लाने के बाद पुनः उपयोग में नहीं लाया जा सकता, इनका निर्माण तथा विकास एक लंबे भूवैज्ञानिक अंतराल में हुआ है, अनवीकरणीय संसाधन कहलाते हैं।
- ★ निजी स्वामित्व वाले व्यक्तिगत संसाधन कहलाते हैं।
- ★ वे संसाधन जिनका उपयोग समुदाय के सभी लोग करते हैं, सामुदायिक संसाधन कहलाते हैं।
- ★ किसी भी प्रकार के संसाधन जो राष्ट्र की भौगोलिक सीमा के भीतर मौजूद हों, राष्ट्रीय संसाधन होते हैं। व्यक्तिगत, सामुदायिक संसाधनों को राष्ट्र हित में राष्ट्रीय सरकार द्वारा अधिगृहीत किया जा सकता है।
- ★ वे संसाधन जो किसी क्षेत्र में विद्यमान तो हैं, परंतु इनका उपयोग नहीं हो रहा है, संभावी संसाधन कहलाते हैं।
- ★ वे संसाधन जिनका सर्वेक्षण किया जा चुका है, इनके उपयोग की गुणवत्ता तथा मात्रा निर्धारित हो चुकी है, उन्हे विकसित संसाधन कहते हैं।

- प्रकृति में उपलब्ध होने वाले वे पदार्थ जो मानव आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं। लेकिन तकनीकी ज्ञान न होने या पूरी तरह विकसित न होने के कारण पहुँच के बाहर हैं, भंडार कहलाते हैं।
- सतत् पोषणीय विकास – इस तरीके से विकास किया जाए जिससे पर्यावरण को हानि न पहुँचे तथा वर्तमान में किए जा रहे विकास के द्वारा भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं की अवहेलना न हो।
- संसाधन नियोजन – ऐसे उपाय अथवा तकनीक जिसके द्वारा संसाधनों का उचित प्रयोग सुनिश्चित किया जा सके।
- संसाधन संरक्षण – संसाधनों का न्यायसंगत तथा योजनाबद्ध प्रयोग, जिससे संसाधनों का अपव्यय न हो।
- भूमि निम्नीकरण – विभिन्न प्राकृतिक तथा मानवीय क्रियाकलापों द्वारा मृदा का कृषि के योग्य न रह पाना।
- निवल अथवा शुद्ध बोया गया क्षेत्र – वह क्षेत्र जहाँ वर्ष में एक बार या एक से अधिक बार कृषि की गई हो।
- कुल बोया गया क्षेत्र – शुद्ध बोए गए क्षेत्र में परती भूमि को जोड़ना।
- परती भूमि – वह भूखंड जिस पर कुछ समय खेती नहीं की जाती और खाली छोड़ दिया जाता है।
- बंजर भूमि – वह भूखंड जिस पर कोई पैदावार नहीं होती तथा जो पहाड़ी, रेतीली अथवा दलदली होती है।
- लैटेराइट मृदा – अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में मिट्टी की ऊपरी परत के तेजी से कटाव से निर्मित मृदा।
- मृदा अपरदन – प्राकृतिक कारकों द्वारा मृदा का एक स्थान से हटना।
- उत्खात भूमि – प्रवाहित जल तथा पवनों के द्वारा किए जाने वाले मृदा अपरदन से उत्खात भूमि का निर्माण।

अति लघु उत्तर वाले प्रश्न (1 अंक वाले प्रश्न)

1. भारत में सबसे अधिक कौन सी मृदा पाई जाती है ? इसका निर्माण किस प्रकार हुआ ?
2. महाराष्ट्र, सौराष्ट्र और मालवा में कौन सी मृदा पाई जाती है ? इस मृदा का निर्माण किस प्रकार हुआ ?
3. मृदा निर्माण की प्रक्रिया में किन्हीं दो महत्त्वपूर्ण कारक लिखो ?
4. भारत में पाई जाने वाली विभिन्न मृदाओं में किन्हीं दो के नाम लिखो।
5. वन मृदा की दो विशेषताएँ लिखो ?
6. मरूस्थलीय मृदा की दो विशेषताएँ बताइए ?
7. पृथ्वी सम्मेलन 1992 का मुख्य उद्देश्य क्या था ?
8. एजेंडा 21 क्या है ?
9. किन्हीं दो राज्यों के नाम बताइए जहाँ सोपानी कृषि (सीढ़ीदार कृषि) की जाती है ?
10. ऐसी दो मानवीय क्रियाएँ लिखें जिनके द्वारा भूमि का निम्नीकरण होता है ?

लघु/दीर्घ उत्तर वाले प्रश्न 3/5 अंक वाले प्रश्न

1. संसाधनों के अति उपभोग से कौन-कौन सी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं ?
2. 'खादर' और 'बांगर' में क्या अंतर है ?
3. पृथ्वी सम्मेलन 1992 पर टिप्पणी लिखो।
4. मृदा अपरदन को किस प्रकार रोका जा सकता है ? विभिन्न उपायों को लिखो।
5. शुद्ध बोए गए क्षेत्र तथा कुल बोए गए क्षेत्र में अंतर स्पष्ट कीजिए ?
6. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर' संसाधन संरक्षण' के लिए क्या-क्या प्रयास किए गए हैं ?

7. संसाधन नियोजन से आप क्या समझते हैं? संसाधनों का संरक्षण क्यों आवश्यक हैं?

8. स्वामित्व के आधार पर संसाधनों के विभिन्न प्रकारों को समझाइए।

9. मृदा निर्माण में कौन कौन से कारक उत्तरदायी है? स्पष्ट करो।

10. भारत में पाई जाने वाली मृदाओं का वर्णन करो तथा उनका वितरण भारत के मानचित्र में दर्शाइए।

उत्तर कुंजी –

अति लघु उत्तर वाले प्रश्नों के उत्तर :-

1. जलोढ़ मृदा। इसका निर्माण नदियों द्वारा लाए गए अवसादों से हुआ है।

2. काली मृदा! इसका निर्माण ज्वालामुखी के मैग्मा तथा आग्नेय शैलों के द्वारा हुआ है?

3. 1) उच्चावच 2) जनक शैल
   3) जलवायु 4) वनस्पति
   5) संस्तर शैलें 6) ह्यूमस
   7) समय

4. 1) जलोढ़ मृदा 2) काली मृदा
   3) लाल व पीली मृदा 4) लैटेराइट मृदा
   5) मरूस्थलीय मृदा 6) वन मृदा

5. 1) नदी घाटियों में मृदा दोमट तथा सिल्टदार परंतु ऊपरी ढलानों पर इनका गठन मोटे कणों द्वारा।
   2) हिमालय के हिम क्षेत्रों में ये अधिसिलिक तथा ह्यूमस रहित

6. 1) रंग लाल और भूरा
   2) रेतीली और लवणीय

3) ह्यूमस और नमी की मात्रा कम।

7. पर्यावरण संरक्षण तथा सामाजिक आर्थिक विकास की समस्याओं का हल ढूँढना।

8. एक कार्यसूची है, जिसका उद्देश्य समान हितों, पारस्परिक आवश्यकताओं एवं सम्मिलित जिम्मेदारियों के अनुसार विश्व सहयोग के द्वारा पर्यावरणीय क्षति, गरीबी और रोगों से निपटना।

9. जम्मू व कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, अरूणाचल प्रदेश, मणिपुर, नागालैंड, मिजोरम।

10. 1) अति पशुचारण 2) वनोन्मूलन

3) खनन 4) अत्यधिक भौमजल का निष्कासन

लघु/दीर्घ उत्तर वाले प्रश्नों के उत्तर (3/5 अंको वाले)

1. 1) संसाधनों का ह्रास

2) संसाधन समाज के कुछ ही लोगों के हाथ में। एक साधन संपन्न दूसरा संसाधन हीन वर्ग।

3) वैश्विक पारिस्थतिक संकट जैसे भूमंडलीय तापन (ग्लोबल वार्मिंग), ओजोन परत का क्षय, पर्यावरण प्रदूषण, भूमि निम्नीकरण का होना।

2.

खादर	बांगर
1) नवीन जलोढ़	1) प्राचीन जलोढ़
2) अधिक बारीक व रेतीली	2) कंकड़ तथा कैल्शियम कार्बोनेट
3) बार-बार नवीकरण	3) बार-बार नवीकरण नहीं
4) नदी के पास डेल्टा तथा बाढ़ निर्मित मैदानों में पाई जाती है।	4) नदी से दूर ऊँचे स्तर पर

3. ★ जून 1992 में रियो डिजेनेरो (ब्राजील) में आयोजित

★ 100 से अधिक देशों के राष्ट्राध्यक्षों ने भाग लिया।

★ विश्व स्तर पर उभरते पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक आर्थिक समस्याओं का हल ढूंढ़ने के लिए आयोजित।

★ नेताओं द्वारा भूमंडलीय जलवायु परिवर्तन और जैविक विविधता के घोषणापत्र पर हस्ताक्षर।

★ भूमंडलीय वन सिद्धांतों पर सहमति।

4. 1) नदियों पर बाँध बनाकर उनके बहाव को कम करना।

2) अधिक से अधिक वृक्ष लगाना।

3) मरूस्थलीय क्षेत्रों में काँटेदार वनस्पति लगाकर।

4) पहाड़ी क्षेत्रों में सीढ़ीनुमा खेत बनाकर।

5) मरूस्थलीय क्षेत्रों के किनारों पर पेड़ लगाकर।

5. शुद्ध बोया गया क्षेत्र :-

1) कुल ज्ञात क्षेत्रफल का वह भाग जो कृषि के लिए उपयोगी।

2) भारत में कुल क्षेत्रफल का लगभग आधा भाग शुद्ध बोया गया क्षेत्र

3) गणना वर्ष में एक फसल के आधार पर

कुल बोया गया क्षेत्र :-

1) वह क्षेत्र जिसमें कृषि अवधि में एक से अधिक फसलें बोना

2) कुल बोया गया क्षेत्र भारत में शुद्ध बोए गए क्षेत्र से बहुत अधिक।

3) गणना वर्ष में एक से अधिक फसलों के बोए जाने के आधार पर।

6. 1) 1968 में 'क्लब ऑफ रोम' ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यवस्थित ढंग से संसाधन संरक्षण के पक्ष में अपनी आवाज उठाई।

2) 1974 में शुमेसर ने पुस्तक 'स्माइल इज ब्यूटीफुल' में गाँधी के दर्शन की पुनरावृत्ति की।

3) 1987 में ब्रंटलैण्ड आयोग ने 'सतत पोषणीय विकास' की संकल्पना प्रस्तुत की।

4) महत्त्वपूर्ण योगदान पृथ्वी सम्मेलन 1992 द्वारा किया गया।

7. ★ संसाधन नियोजन 'संसाधनों के उचित उपयोग की तकनीक और कौशल।

★ संसाधन सीमित तथा उनका वितरण असमान।

★ विवेकपूर्ण उपयोग के नियोजन अत्यंत महत्त्वपूर्ण

★ संसाधन नियोजन की आवश्यकता -

1) सीमित मात्रा में उपलब्ध

2) अनवीकरणीय हैं।

8. स्वामित्व के आधार पर संसाधनों का वर्गीकरण -

ए) व्यक्तिगत संसाधन -

★ व्यक्ति के स्वामित्व में

★ बाग, चारागाह, तालाब, कुआँ आदि

बी) सामुदायिक संसाधन -

★ समुदाय के सभी लोगों को उपलब्ध

★ गाँव की पशुचारण भूमि, श्मशान भूमि, तालाब

★ नगरीय क्षेत्रों में पार्क, पिकनिक स्थल, खेल के मैदान।

सी) राष्ट्रीय संसाधन -

★ तकनीकी रूप से सभी संसाधन राष्ट्रीय हैं।

★ राष्ट्रीय सरकार को अधिकार कि वह राष्ट्र हित में व्यक्तिगत संसाधनों का अधिग्रहण कर सकती हैं।

★ खनिज, संसाधन, जल संसाधन, वन तथा वन्य जीवन, राजनैतिक सीमाओं के भीतर संपूर्ण भूमि।

★ 12 समुद्री मील तक महासागरीय क्षेत्र में पाए जाने वाले सभी संसाधन राष्ट्रीय हैं।

डी) अंतर्राष्ट्रीय संसाधन –

★ अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा नियम बनाना।

★ तट रेखा से 200 किलोमीटर से परे खुले महासागरीय संसाधनों पर किसी देश का अधिकार नहीं।

★ अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की अनुमति के बिना उपयोग नहीं।

9. 1) शैल – मृदा के लिए उचित सामग्री मिलना।

2) जलवायु– लंबी अवधि में शैलों को छोटे–छोटे टुकड़ों तथा कणों में बदलना।

3) पेड़–पौधे– जड़ें शैलों में घुसकर उन्हें तोड़–फोड़ देती हैं।

4) अति चारण – पशुओं द्वारा निरंतर चराई से शैलों में परिवर्तन संभव।

5) वर्षा – वर्षा का जल शैलों के छिद्रों में घुसकर तोड़फोड़ का कार्य करता है। लंबे समय तक इन कारकों के क्रियाशील रहने से शैलों में टूटने की क्रिया चलती रहती है। धीरे–धीरे मृदा का निर्माण होता है।

10. 1) जलोढ़ मृदा–

★ संपूर्ण उत्तरी मैदान में फैलाव

★ सिंधु, गंगा तथा ब्रह्मपुत्र, नदी तंत्रों द्वारा विकसित

★ रेत, सिल्ट तथा मृत्तिका के विभिन्न अनुपात

★ बहुत उपजाऊ तथा गन्ना, चावल, गेहूँ आदि फसलों के लिए उपयुक्त

2) काली मृदा –

★ रंग काला तथा दूसरा नाम रेगर मृदा

★ कपास तथा मूँगफली की खेती के लिए अत्यंत उपयुक्त।

★ महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, मालवा, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के पठार में पाई जाती है

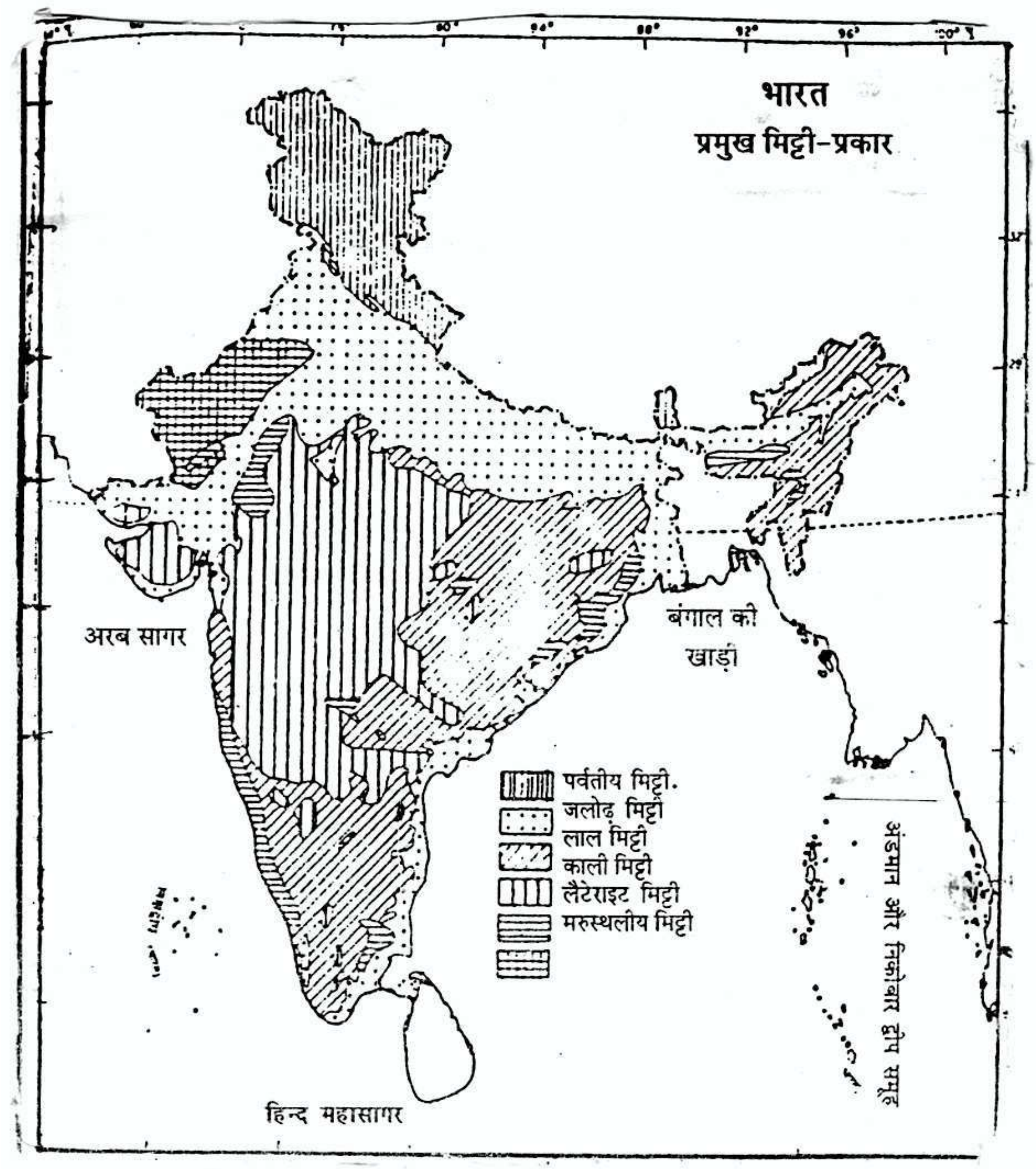

★ कैल्शियम कार्बोनेट, मैग्निशियम, पोटाश और चूने जैसे तत्वों से परिपूर्ण।

3) लाल और पीली मृदा –

★ लोहे (आयरन) के कणों की अधिकता के कारण रंग लाल तथा कहीं-कहीं पर पीला भी।

★ उड़ीसा, छत्तीसगढ़, मध्य गंगा के मैदान के दक्षिणी छोर और पश्चिमी घाट में पहाड़ी पद पर पाई जाती है।

4) लेटराइट मृदा –

★ उच्च तापमान और अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में विकसित।

★ भारी वर्षा से अत्यधिक निक्षालन का परिणाम।

★ ह्यूमस की मात्रा कम

★ कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु मध्यप्रदेश, उड़ीसा तथा असम के पहाड़ी क्षेत्रों में पाई जाती है।

★ काजू की फसल के लिए उपयुक्त

5) मरूस्थलीय मृदा –

★ रंग लाल तथा भूरा

★ रेतीली तथा लवणीय

★ शुष्क जलवायु तथा उच्च तापमान के कारण जल वाष्पन की दर अधिक

★ ह्यूमस और नमी की मात्रा कम

★ उचित सिंचाई प्रबंधन के द्वारा उपजाऊ बनाया जा सकता है।

6) वन मृदा –

★ पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती है।

★ गठन में पर्वतीय पर्यावरण के अनुसार बदलाव

★ नदी घटियों में मृदा दोमट तथा सिल्टदार

★ हिमाच्छादित क्षेत्रों में मृदा का अधिक अपरदन

इन मृदाओं का वितरण भारत के रेखामानचित्र में दर्शाया गया है। इसका अवलोकन कर अभ्यास करें।